निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1) सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली मक्खन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है- नाम है लक्ष्मिन अर्थात् लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विद्वत्ता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि मक्खन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर मक्खन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धिसूचक नाम किसी को बताती नहीं।

प्रश्न(क) प्रस्तुत गद्यांश के रचना तथा रचनाकार के नाम लिखें।

उत्तर रचना - मक्खन, लेखिका - महादेवी वर्मा।

प्रश्न(ख) मक्खन के नाम और उसके जीवन में क्या विरोधाभास था?

उत्तर- मक्खन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था जो वैभव, सुख, संपन्नता आदि का प्रतीक, जबकि मक्खन की अपनी वास्तविक स्थिति इसके ठीक विपरीत थी। वह अत्यंत गरीब, दीन-हीन महिला थी, जिसे वैभव सुख आदि से कुछ लेना-देना न था। यही उसके नाम और जीवन में विरोधाभास था।

प्रश्न (ग) भक्तिन के संदर्भ में हनुमान जी का उल्लेख क्यों हुआ है?

उत्तर – भक्तिन के संदर्भ में हनुमान जी का उल्लेख इसलिए हुआ है क्योंकि भक्तिन लेखिका महादेवी वर्मा की सेवा उसी निःस्वार्थ भाव से करती थी। जिस तरह हनुमान जी श्री राम की सेवा निःस्वार्थ भाव से किया करते थे।

प्रश्न (घ) "जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है" – अपने आस-पास के जगत से उदाहरण देकर प्रस्तुत कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर – लेखिका का मानना है कि नाम व गुणों में साम्यता अनिवार्य नहीं है। अकसर देखा जाता है कि नाम और गुणों में बहुत अंतर होता है। 'शांति' नाम वाली लड़की सदैव झगड़ती नज़र आती है, जबकि 'गरीबदास' के पास धन की कमी नहीं होती।

(2) जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है। जब उसने गेहुँए रंग और बतिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधाती बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के

पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक- भुशुंडी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं। छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया।

प्रश्न(क) भक्तिन के जीवन के दूसरे परिच्छेद में ऐसा क्या हुआ जिसके कारण उसकी उपेक्षा शुरू हो गई?

उत्तर – भक्तिन के जीवन के दूसरे परिच्छेद में एक- के- बाद एक तीन कन्याओं को जन्म दिया। इस कारण सास व जेठानियों ने उसकी उपेक्षा शुरू कर दी।

प्रश्न(ख) लेखिका की राय में भक्तिन की उपेक्षा उचित थी या नहीं?

उत्तर – लेखिका ने यह बात व्यंग्य में कही है। इसका कारण यह है कि भारतीय समाज में उसी स्त्री को सम्मान मिलता है जो पुत्र को जन्म देती है। लड़कियों को जन्म देने वाली स्त्री को अशुभ माना जाता है। भक्तिन ने तो तीन लड़कियों को जन्म दिया। अतः उसकी उपेक्षा उचित ही थी।

प्रश्न(ग) जेठानियों को सम्मान क्यों मिलता था?

उत्तर – जेठानियों ने काक – भुशुंडी जैसे काले पुत्रों को जन्म दिया था। इस कार्य के बाद वे पुरखिन पद की दावेदार बन गई थी।